Visit Dwarkadheeshvastu.com For

FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in CD format. CD Cover can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in PENDRIVE and EXTERNAL HARD DISK.

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Surdas Bhajan Maala

हरिसो मीत न

हरि सो मीत न देखौं कोई।
अंतकाल सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतिच्छो होई॥
ग्राह गहे गजपति मुकरायो हाथ चक्र लै धायो।
तजि बैकुंठ गरूड़ तजि श्री तजि निकट दास के आयो॥
दुरबासा को साप निवार्‌यो अंबरीष पति राखी।
ब्रह्मलोक परजंत फिर्‌यों तहं, देव मुनीजन साखी॥
लाखागृह तें जरत पांडु-सुत बुधि बल नाथ उबारे।
सूरदास प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे॥

कृष्ण कहत कहा जात

तुम्हरो कृष्ण कहत कहा जात।
बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यों तरवर के पात॥
सीत बायु कफ कंठ बिरोध्यौ रसना टूटी बात।
प्रान लिये जम जात मूढ़ मति देखत जननी तात॥
छिनु एक मांह कोटि जुग बीतत, पाछे नरक की बात।
यह जग प्रीति सुआ सेमर ज्यों चाखत ही उड़ि जात॥
जम की त्रास निकट नहि आवत चरनन चित्त लगात।
गावत सूर बृथा या देही इतनौ कत इतरात॥

जनम सफल कर लीजै

रे मन, कृष्ण नाम कहि लीजै।
गुरु के बचन अटल करि मानो
साधु समागम कीजै॥
पढ़िये गुनिये भगति भागवत
और कहा कथि कीजै।
कृष्णनाम बिनु जनमु बादिही
बिरथा काहे कीजै॥
कृष्णनाम रस बह्यो जात है
तृषावन्त ह्वै पीजै।
सूरदास हरिसरन ताकिये
जनम सफल करि लीजै॥

बहुरि न भव चलि आये

जो सुख होत गोपालहि गाये।
सो नहि होत किये जप-तप के
कोटिक तीरथ न्हाये॥
दिये लेत नहिं चारि पदारथ,
चरन कमल चित लाये।
तीनि लोक तृन सम करि लेखत,
नंदनंदन उर आये॥
बंसीबट बृंदाबन जमुना
तजि बैकुंठ को जाये।
सूरदास हरि को सुमिरन करि,
बहुरि न भव चलि आये॥

तुम जानत सब अंतरजामी

तुम मेरी राखो लाज हरी।

तुम जानत सब अंतरजामी, करनी कछु न करी॥

औगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।

सब प्रंपच की पोट बांधि कै, अपने सीस धरी॥

दारा-सुत-धन मोह लिये हैं, सुधि-बुधि सब बिसरी।

सूर पतित को बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी॥

अविद्या दूर करौ

अब मैं नाच्यों बहुत गुपाल।
काम क्रोध को पहिरि चोलना, कंठ बिषय की माल॥
महा मोह के नूपुर बाजत, निंदा शब्द रसाल।
भरम भर्‌यो मन भयो पखावज, चलत कुसंगत चाल॥
तृष्ना नाद करत घट भीतर, नाना बिधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बाध्यों, लोभ तिलक दै भाल॥
कोटिक कला कांछि देखराई, जलथल सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या, दूर करौ नंदलाल॥

जनके दुःख निवारो

अब मोहि भीजत क्यों न उबारो।
दीनबन्धु करुनामय स्वामी, जनके दुःख निवारो॥
ममता घटा, मोह की बूंदें, सरिता मैन अपारो।
बूड़त कतहुं थाह नहिं पावत, गुरुजन ओट अधारो॥
गरजन क्रोध, लोभ को नारो, सूझत कहुं न उधारो।
तृसना तड़ित चमकि छिन ही छिन, अह निसि यह तन जारो॥
यह सब जल कलिमलहिं गहे है, बोरत सहस प्रकारो।
सूरदास पतितन को संगी, बिरदहिं नाथ सम्हारो॥

कृष्ण नाम प्रभुताई

बिनति जन कासों करै गुसांई।
तुम बिनु दीनदयालु, देवतन सब फीकी ठकुराई॥
अपने-से कर चरन नैन मुख अपनी-सी बुधि बाई।
काल करम बस फिरत सकल प्रभु ते हमरी ही नाई॥
पराधीन परबदन निहार मानत मोह बड़ाई।
हंसे हंसै, बिलखै लखि पर दुख, ज्यों जलदर्पन झाई॥
लियो दियो चाहै जो कोऊ सुनि समरथ जदुराई।
देव सकल ब्यापार निरत नित ज्यों पसु दूध चराई॥
तुम बिनु और न कोउ कृपानिधि पावै पीर पराई।
सूरदास के त्रास हरन को कृष्ण नाम प्रभुताई॥

तुम्हरे चरन गहौं

जैसेहि राखौ तैसेहि रहौं।

जानत हौ सब दुख-सुख जनकौ मुखकरि कहा कहौं॥
कबहुंक भोजन देत कृपाकरि कबहुंक भूख सहौं।
कबहुंक चढ़ौ तुरंग महागज कबहुंक भार बहौं॥
कमलनयन घनस्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं।
सूरदास प्रभु भगत कृपानिधि तुम्हरे चरन गहौं॥

बंदौं चरन सरोज

बंदौं चरन सरोज तुम्हारे।
जे पदपदुम सदासिव के धन, सिंधुसुता उरतें नहिं टारे॥
जे पदपदुम परसि भइ पावन, सुरसरि दरस कटत अघ भारे।
जे पदपदुम परसि ऋषि-पत्नी, बलि, नृप, ब्याध-पतित बहु तारे॥
जे पदपदुम रमत बृंदाबन अहि सिर धरि, अगनित रिपु मारे।
जे पदपदुम परसि ब्रज भामिनि, सरबसु दै सुत सदन बिसारे॥
जे पदपदुम रमत पांडव दल दूत, भये सब काज संवारे।
सूरदास तेई पदपंकज त्रिबिध, ताप दुख हरन हमारे॥

नहिं पन जात टरो

प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने पनहि करो॥
इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परो।
यह दुबिधा पारस नहिं जानत कंचन करत खरो॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए सुरसरि नाम परो॥
एक जीव इक ब्रह्म कहावत सूर स्याम झगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो नहिं पन जात टरो॥

हारे को हरिनाम

सुने री मैंने निरबल के बल राम।

पिछली साख भरूं संतन की, अड़े संवारे काम॥
जब लगि गज बल अपना बरत्यो, नेक सर्‌यो नहिं काम।
निरबल ह्वै बल राम पुकार्‌यो, आये आधे नाम॥
द्रुपद सुता निरबल भइ ता दिन, तजि आये निज धाम।
दुस्सासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये स्याम॥
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल, चौथो है बल दाम।
सूर किसोर-कृपा तें सब बल, हारे को हरिनाम॥

सुनहु करुना मूल

अबके माधव मोहि उधारि।
मगन हौं भव-अंबु-निधि में कृपासिंधु मुरारि॥
नीर अति गम्भीर माया, लोभ लहरि तरंग।
लिये जात अगाध जल में गहे ग्राह अनंग॥
मीन इंद्रिय अतिहि काटत मोट अघ सिर भार।
पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सेवार॥
काम क्रोध समेत तृस्ना पवन अति झकझोर।
नाहिं चितवन देत तिय सुत नाम नौका ओर॥
थक्यो बीच बेहाल बिहबल सुनहु करुना मूल।
स्याम भुज गहि काढ़ि डारहू सूर ब्रज के कूल॥

अनत कहूं नहिं पाऊं

काके द्वार जाइ सिर नाऊं, पर हथ कहां बिकाऊं॥
ऐसो को दाता है समरथ, जाके दिये अघाऊं।
अंतकाल तुमरो सुमिरन गति, अनत कहूं नहिं पाऊं॥
रंक अचाची कियो सुदामा, दियो अभय पद ठाऊं।
कामधेनु चिंतामनि दीनो, कलप, बृच्छ तर छाऊं॥
भवसमुद्र अति देखि भयानक, मन से अधिक डराऊं।
कीजै कृपा सुमिरि अपनो पन, सूरदास बलि जाऊं॥

चढ़त न दूजो रंग

छांड़ि मन हरि बिमुखन को संग।
जिनके संग कुबुधि उपजति है परत भजन में भंग॥
कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर चुगाये स्वान नहाये गंग॥
खर को कहा अरगजा-लेपन, मरकट भूषण अंग।
गज को कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग॥
पाहन पतित बांन नहि बेधत, रीतो करत निषंग।
सूरदास खल कारी कामरी, चढ़त न दूजो रंग॥

भगति बिनु

भगति बिनु बैल बिराने ह्वैहो॥

पांव चारि, सिर सींग, गूंग मुख, तब गुन कैसे गैहौ।
टूटे कंध सु-फूटी नाकनि, कौ लौ धौ भुस खैहो॥
लादत जोतत लकुट बाजिहै, तब कहं मूड़ दुरैहौ।
सीत घाम घन बिपति बहुत बिधि, भार तरे मरि जैहौ।
हरि-दासन को कह्यौ न मानत, कियो आपनो पैहौ।
सूरदास भगवंत भजन बिनु, मिथ्या जनम गंवैहौ॥

नाम भजन बिनु

रे मन मूरख जनम गंवायो।

कर अभिमान बिषय सों राच्यों, नाम सरन नहि आयो॥
यह संसार फूल सेमर को, सुंदर देखि लुभायो।
चाखन लाग्यो रूई उड़ि गइ, हाथ कछु नहिं आयो॥
कहा भयो अब के मन सोचे, पहिले नाहिं कमायो।
सूरदास हरि नाम-भजन बिनु, सिर धुनि-धुनि पछितायो॥

बिरथा यह देही

रे मन जनम अकारथ जात।

बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै हैं ज्यौं तरूवर के पात॥
सन्निपात कफ कंठ बिरोधी, रसना टूटी जात।
प्रान लिये जम जात मूढ़मति, देखत जननी तात॥
छिन इक मांहि कोटि जुग बीतत, फेरि नरक की बात।
यह जग प्रीति सुआ सेमर की, चाखत ही उड़ि जात॥
जमके फंद नाहि परू बौरे, चरनन चित्त लगात।
कहत सूर बिरथा यह देही, काहे को इतरात॥

कहौ कौन गति

कितक दिन हरि सुमिरन बिन खोये।
पर निंदा रस में रसना के सगरे परत डबोये॥
तेल लगाइ कियो रूचि मर्दन बस्त्रहिं मलि मलि धोये।
तिलक लगाइ चले स्वामी बनि विषयनि के मुख जोये॥
काल बलीते सब जग कंपत ब्रह्मादिक हूं रोये।
सूर अधम की कहौ कौन गति उदरि भरे पर सोये॥

जे भजत राम को

कहा कमी जाके रामधनी

मनसा नाथ मनोरथ-पूरन सुखनिधान जाकी मौज घनी॥
अर्थ धर्म अरु काम मोच्छ फल, चार पदारथ देत छनी।
इन्द्र समान है जाके सेवक मो बपुरे की कहा गनी॥
कहौ कृपन की माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी।
खाइ न सकै खरच्च नहिं जानै ज्यों भुजंग सिर रहत मनी॥
आनंद मगन रामगुन गावै दुख संताप की काटि तनी।
सूर कहत जे भजत राम को, तिन सों हरिसों सदा बनी॥

यह अजहूं है छोटी

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी!

किती बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूं है छोटी॥
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वैहे लांबी मोटी।
काढ़त गुहत नहावत ओंछति नागिन-सी ह्वै लोटी॥
काचो दूध पियावत पचि पचि देत न माखन रोटी।
सूर स्याम चिरजिव दोउ भैया हरि-हलधर की जोटी॥

सूरदास बलि जाई

नंदनंदन मुख देखो माई।
अंग अंग छबि उगे मनहुं रबि ससि अरु समर लजाई॥
खंजन मीन कुरंग भृंग बारिज पर अति रुचि पाई।
स्रुति मंडल कुंडल बिंबिमकर बिलसत मदन सहाई॥
कंठ कपोत कीर बिद्रुमपर दारिम कनन चुनाई।
दुइ सारंग बांहपर मुरली आई देत दोहाई॥
मोहे थिर चर बिटप बिहंगम व्योमबिमान थकाई।
कुसुमांजुलि बरसत सुर ऊपर सूरदास बलि जाई॥

मैं नहिं माखन खायो

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैवन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो॥
चार पहर बंसीबट भटक्यो, सांझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि बिधि पायो॥
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतिआयो॥
जिय तेरे कछु भेद उपजिहैं, जानि परायो जायो।
यह ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहि नाच नचायो॥
सूरदास तब बिहंसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो॥

तुमरे दरस को

कहन लगे मोहन, मैया मैया।

पिता नंद सों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया।
ऊंचे चढ़ि चढ़ि कहत जसोदा लै लै नाम कन्हैया॥
दूरि कहूं जिनि जाहु लला रे मारेगी काहू की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल घर घर लेत बलैया॥
मनिखंभन प्रतिबिंब बिलोकत नाचत कुंवर कन्हैया।
नंद जसोदाजी के उरतें इह छबि अनत न जइया॥
सूरदास प्रभु तुमरे दरस को चरन की बलि जैया।

देवकी सों कहियो

संदेसो देवकी सों कहियो।

हौं तो धाय तुम्हारे सुत की मया करत नित रहियो॥
जदपि टेव तुम जानत उनकी तऊ मोहि कहि आवै।
प्रातहिं उठत श्याम सुन्दर को माखन रोटी भावै॥
तेल उबटनो अरु तातो जल, ताहि देखि भजि जावै।
जोइ जोइ मांगत सोइ सोइ देती क्रम क्रम करि करि न्हावै॥
सूर पथिक सुनि मोहि रैन दिन बढ़्यो रहत उर सोच।
मेरो ललित लडैतो मोहन ह्वैहै करत सकोच॥

संदेसो देवकी सों कहियो।

सरबस लै गयो नंदकिसोर

मधुकर स्याम हमारे चोर।

मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयन की कोर॥
पकरे हुते आन उर अंतर प्रेम प्रीति के जोर।
गये छुड़ाय तोर सब बंधन दै गये हंसन अकोर॥
उचक परों जागत निसि बीते तारे गिनत भई भोर।
सूरदास प्रभु हत मन मेरो, सरबस लै गयो नंदकिसोर॥

बिन गुपाल

बिन गुपाल बैरन भई कुंजै।
तब ये लता लगति अति सीतल,
अब भई बिषम ज्वाल की पुंजैं॥
बृथा बहत जमुना, खग बोलत,
बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन, पानि घनसार, सजीवनि,
दधि-सुत-किरनभानु भइ भुंजैं॥
हे ऊधो कहियो माधव सों,
बिरह करत कर मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु का मग जोवत,
अंखियां भई बरन ज्यों गुंजैं॥

जब तें स्याम सिधारे

निसिदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस ऋतु हम पर
जब तें स्याम सिधारे॥
अंजन थिर न रहत अंखियन में
कर कपोल भये कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूं,
उर बिच बहत पनारे॥
आंसू सलिल भये पग थाके,
बहै जात नित सारे॥
सूरदास अब डूबत है ब्रज,
काहे न लेत उबारे॥

कहँ लगि करौं बड़ाई

सबसों ऊंची प्रेम सगाई।

दुरजोधन के मेवा त्यागे, साग बिदुर घर खाई॥
जूठे फल सबरी के खाये, बहु बिधि स्वाद बताई।
प्रेम के बस नृप सेवा कीन्हीं आप बने हरि नाई॥
राजसु, जग्य जुधिष्ठिर कीन्हों तामे जूंठ उठाई।
प्रेम के बस पारथ रथ हांक्यो, भूलि गये ठकुराई॥
ऐसी प्रीति बढ़ी बृंदाबन, गोपिन नाच नचाई।
सूर कूर इहि लायक नाहीं, कहं लगि करौं बड़ाई॥

कृष्ण बिना

सोइ रसना जो हरिगुन गावै।
नैनन की छबि यहै चतुरता,
ज्यों मकरंद मुकुदहि ध्यावै॥
निर्मल चित्त तौ सोई सांचो,
कृष्ण बिना जिय और न भावै।
स्रवनन की जु यहै अधिकाई,
सुनि हरि कथा सुधारस प्यावै॥
कर तेई जे स्यामहि सेवै
चरननि चलि बृंदाबन जावै।
सूरदास जैवे बलि ताकें,
जो हरिजू सों प्रीति बढ़ावै॥

मन अभिलाष करै

जसुमति मन अभिलाष करै।
कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै॥
कब द्वै दंत दूध के देखौं कब तुतरे मुख बैन झरै।
कब नंदहि कहि बाबा बोलै कब जननी कहि मोहि ररै॥
कब मेरो अंचरा गहि मोहना जोइ-सोइ कहि मो सों झगरै।
कब धौं तनक तनक कछु खैहैं अपने कर सों मुखहिं भरै॥
कब हंसि बात कहैगो मो सों छबि पेखत दुख दूरि टरै।
स्याम अकेले आंगन छांड़े आपु गई कछु काज घरै॥
एहि अंतर अंधबाइ उठी इक गरजत गमन सहित थहरै।
सूरदास ब्रज लोग सुनत धुनि जो जहं तहं सब अतिहि डरै॥

आखिर जाति अहीर

चले गये दिल के दामनगीर।
जब सुधि आवे प्यारे दरस की,
उठत कलेजे पीर॥
नटवर भेष नयन रतनारे,
सुंदर स्याम सरीर॥
आपन जाय द्वारका छाए,
खारी नद के तीर॥
ब्रजगोपिन को प्रेम बिसार्‌या,
ऐसे भए बेपीर॥
बृंदाबन बंसीबट त्यागो
निरमल जमुना नीर॥
सूर स्याम ललिता उठ बोली,
आखिर जाति अहीर॥

ब्रज बिसरत नाहीं

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।

हंससुता की सुंदर कलरव अरु तरुवन की छाहीं॥

वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खिरक दुहावन जाहीं।

ग्वालबाल सब करत कुलाहल नाचत गह-गह बाहीं॥

यहं मथुरा कंचन की नगरी मनि-मुक्ता जिहि माहीं।

जबहिं सुरत आवत वा सुख की जिया उमगत सुध नाहीं॥

अनगिन भांति करी बहु लीला जसुदा-नंद निबाही।

सूरदास प्रभु रहे मौन मह गह कह-कह पछिताहीं॥

तो कहियो समुझाई

ऊधौ इतनो कहियो जाई।
हम आवँगे दोऊ भैया, मैया, जनि अकुलाई॥
याको बिलग बहुत हम मान्यो, जो कहि पठियो धाई॥
वह गुन हमको कहा बिसरिहैं, बड़े किये पय प्याई॥
और जु मिल्यो नंद बाबसों, तो कहियो समुझाई॥
औरौं दुखी होन नहि पावै, धवरी घूमरि गाई॥
जद्यपि यहां अनेक भांति सुख, तदपि रह्यो न जाई॥
सूरदास देखौं बजबासिन, तबहि हियो हरखाई॥

कहां लौं कहिये

कहां लौं कहिये ब्रज की बात।
सुनहु स्याम तुम बिनु उन लोगड़ जैसे दिवस बितात॥
गोपी गाई ग्वाल गोसुत वह मलिन बदन कृस गात।
परमदीन जनु सिसिर हिमी हित अंबुजगन बिनु पात॥
जा कहुं आवत देखि दूर ते सब पूछति कुसलात।
चलत न देत प्रेम आतुर उर कर चरनन लपटात॥
पिक चातक बन बसन न पावहि बायस बलिहि न खात।
सूर स्याम संदेसन के डर पथिक न उहि मग जात॥

ऐसी प्रीति की

ऐसी प्रीति की बलि जाउं।
सिंहासन तजि चले मिलन को सुनत सुदामा नाउं॥
गुरु-बांधव अरु बिप्र जानिकै चरनन हाथ पखारे।
अङ्कगाल दै कुसल बूझिके सिंहासन बैठारे॥
अरधंगी बूझत मोहन को कैसे हितू तुम्हारे।
दुर्बल हीन छीन देखतिहो पाउं कहां ते धारे॥
संदीपन के हम औ, सुदामा पढ़े एक चटसार।
सूर स्याम की कौन चलावै भक्तन कृपा अपार॥

तुम्हरे दरस बिन

अंखियां हरि दरसन की प्यासी।
देख्यौ चाहत कमलनैन को,
निसिदिन रहत उदासी॥
केसर तिलक मोतिन की माला,
वृंदाबन के बासी॥
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम,
डारि गये गल-फांसी॥
काहू के मन की को जानत,
लोगन के मन हांसी॥
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन,
लैहों करवट कासी॥

प्रभु बिन दुख दूनो

प्रीति करि काहूं सुख न लह्यो।
प्रीति पतंग करी दीपक सों
आपै प्रान दह्यो॥
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों
करि मुख मांहि गह्यो।
सारंग प्रीति करी जो नाद सों
सन्मुख बान सह्यो॥
हम जो प्रीति करी माधव सों
बनत न कछु कह्यो।
सूरदास प्रभु बिनु दुख दूनो
नैननि नीर बह्यो॥

तुम्हरी कृपा ते

जो हम भले-बुरे तौ तेरे

तुम्हें हमारी लाज बढ़ाई, विनती सुनु प्रभु मेरे।
सब तजि तुव सरनागत आयो, निज कर चरन गहे रे।
तुव प्रताप बल बदत न काहूं, निडर भये घर चेरे।
और देव सब रंक भिखारी, त्यागे बहुत घनेरे।
सूरदास प्रभु तुम्हारी कृपा ते पाये सुख जु घनेरे।

सूरदास द्वारे ठाढ़े

दीनन दुखहरन देव, सन्तन सुखकारी
अजामिल गीध ब्याध, इनमें कहो कौन साध,
पंछी हूं पद पढ़ात गानिका-सी तारी।
ध्रुव के सिर छत्र देत, प्रह्लाद कहं उबार लेत,
भगत हेत बांध्यो सेत, लंकापुरी जारी।
तंदुल देत रीझ जात, सागपातसों अघात,
गिनत नहिं जूठे फल खाटे मीठे खारी।
गजको जब ग्राह ग्रस्यो, दुस्सासन चीर खस्यो,
सभा बीच कृष्ण कृष्ण, द्रौपदी पुकारी।
इतने में हरि आई गये, बसनम आरूढ़ भये,
सूरदास द्वारे ठाढ़ो आंधरो भिखारी।

जै जै कृपा निधान

अबकी राखि लेहु भगवान।

हम अनाथ बैठे द्रुम-डरियां, पारधि साध्यो बान।
ताके डर निकसन चाहत हैं, ऊपर रह्यौ सचान।
दुहूं भांति दुख भयो कृपानिधि, कौन उबारै प्रान।
सुमिरत ही अहि डस्यो पारधी, लाग्यो तीर सचान।
सूरदास गुन कहे लग चरनौं, जै जै कृपानिधान।

प्रभुजी को चेरो

हमैं नन्दनन्दन मोल लियो।

जमकी फांसि काटि मुकरायो अभय अजात कियो।
मूड़ मुड़ाय कंठ बन माला चक्र के चिह्न दियो।
माथे तिलक स्रवन तुलसीदास मेटेव अंग छियो।
सब कोउ कहत गुलाम स्याम को सुनत सिहात हियो।
सूरदास प्रभुजी को चेरो जूठनि खाय जियो।

मो सम

मो सम कौन कुटिल खल कामी।

जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमकहरामी।
भरि भरि उदर बिषय कों धायो जैसे सूकर-ग्रामी।
हरिजन छांड़ि हरी बिमुखन को निसि दिन करत गुलामी।
पापी कौन बड़ों जग मो ते सब पतितन में नामी।
सूर पतित को ठौर कहां है, तुम बिनु श्रीपति स्वामी।

भजन बिन

भजन बिन कूकर सूकर जैसो।
जैसे घर बिलाव के मूसा, रहत बिषय-बस तैसो।
बकी और बक गीध गीधनी, आई जनम लिय वैसों।
उनहूं के ये सुत दारा हैं, इन्हें भेद कहु कैसो।
जीव मारिके उदर भरत हैं, तिनके लेखे ऐसो।
सूरदास भगवंत भजन बिनु, मनो ऊंट खर भैंसों।

जो भगत विरोधी

हम भगतन के भगत हमारे।

सुन अरजुन परतिग्या मोरी यह ब्रत टरत न टारे।
भगतन काज लाज हिय धारिकै पांय पियादे धायौ।
जहं-जहं भीर परे भगतन पै तहं-तहं होत सहायौ।
जो भगतन सों बैर करत है सो निज बैरी मेरो।
देख बिचार भगत हित कारन हांकत हौं रथ तेरो।
जीते-जीत भगत अपने की हारे हार बिचारौं।
सूरस्याम जो भगत विरोधी चक्र सुदरसन मारौं।

जसोदा हरि पालने झुलावै

जसोदा हरि पालने झुलावै

हरावै दुलरावै मल्हारवै जोई सोई कछु गावै।
मेरे लाल को आउ निंदरिया काहे न आनि सुआवै।
तू काहे न बेगि-सी आवै तोको कान्ह बुलावै।
कबहुं पलक हरि मूंदि लेत हैं कबहुं अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै ह्वै रही कर कर सैन बतावै।
इहि अन्तर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरे गावै।
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नेद भामिनी पावै।